पात्र-परिचय

पुरुष—

१ हिमालय—पर्वतराज, हेमत ऋषि, गौरीक पिता ।

२ नारद—देवर्षि, दैवज्ञ ।

३ सप्तर्षि—शिवक दूत, घटक ।

४ शिव—महादेव ।

५ श्रीरामचन्द्र—भगवान् राम ।

६ ब्रह्मा—विधाता ।

७ इन्द्र—देवराज ।

८ विष्णु—प्रसिद्ध देवता ।

९ कामदेव—महादेवक ध्यान तोड़निहार ।



स्त्री—

१ मनाइनि—मएना, गौरीक माय ।

२ गौरी—हिमालयक पुत्री पार्वती ।

३ रति—कामदेवक पत्नी ।



गौरीस्वयंवर-नाटिका

श्री:

पोथी गौरी-स्वयंवर, कान्हाराम बखान ।
गौरी - शङ्कर करहि शुभ, पढ़हि सुनहि मतिमान ॥१॥
सज्जन जनकौं परम प्रिय, सुननहि बाढ़त हुलास ।
कुटिल मूढ़ अज्ञान जड़, सो करिहहि उपहास ॥२॥

पुनः,

श्री गुरु पद पङ्कज सुमरि, हृदय सुमरि सियराम ।
शारद[1] शेश महेश अज, पुरिअ सकल मनकाम ॥३॥
वेद, विप्र, मुनि नारद, सुर[2], सनकादि, गन्धर्व ।
शम्भु चरणरज वन्दि कैं, देहु सुमति सुनि सर्व ॥४॥
विघ्न हरन संकटतरन, सिद्धकरन गणनाह[3] ।
सुमति उक्ति वर देहु मोहि, बरनौं गौरि बियाह ॥५॥
लम्बोदर करिवरबदन[4], एकरदन[5] अभिराम[6] ।
पुरिअ मनोरथ मोर प्रभु, प्रणवत कान्हाराम ॥६॥

मंगल गीत गणेशक--१

जय जय गिरिजा तनय गणेश ।
तुअ गुन बरनि सकहि नहि शेष[7] ॥
लम्बोदर तुअ गुण अनन्त ।
सुर मुनि पाय सकहि नहि अन्त ॥

१—शारदा, शेषनाग, महादेव ओ परब्रह्म । २—देवता ओ सनक आदि ऋषि(ब्रह्माक पुत्र) । ३ - गणेश । ४ - हाथीक मुँहवाला । ५ - एक दा‍ँतवला । ६ - सुन्दर । ७ - शेषनाग ।

कहँ लागि बरनो मनुज[८] शरीर ।
गणनायक हर आरत[९] पीर ॥
गोचर[१०] कर श्री कान्हाराम ।
बिघ्न-हरण शुभ कर सभ ठाम ॥

भगवतीक गीत मालवरागे--२

जय जय[1] दुर्गा दुर्ग प्रताप ।
तुअ भुजबल डर दानव काप ॥
सिंह चढ़लि कर लेल कृपाण[११] ।
कोपि चलल रण रूप भयान[१२] ॥
दानव-बल दलि[१३] कैल ओरान[१४] ।
पिउल रुधिर नहि भेल अघान ॥
रसन[१५] पसार दसन[१६] विकराल ।
ऐसन अरिदल[१७] कैल हत[१८] काल ॥
चण्ड मुण्ड रण खण्डल डारी ।
सुम्भ[2] निसुम्भ जुगल रण मारी ॥
महिष असुर रण कएल प्रकोप ।
ताहि [१९]निपाति[3] कएल अलोप[२०] ॥
असुर निपाति सुरहि सुख देल ।
तुअ रण विजय विदित जग भेल ॥
कान्हाराम भन गोचर बानी ।
सदा सभा सुभ करिय भवानी ॥

८ - मनुष्यक देहवाला । ९ - दुःखीक पीड़ा हरैत छथि । १० - वर्णन । ११—तरुआरि । १२—डराओन । १३—मारि । १४—अन्त । १५—जीह । १६—दाँत । १७—एहिरूपें शत्रुक दलक । १८—हत्या । १९—तकरा खसाय । २०—अदृश्य (मैथिली मे 'अलोपित' शब्दक अर्थ लुप्त ओ 'अपर्याप्त' शब्दक अर्थ पर्याप्त होइछ) ।

1—जै जं । 2 - सम्भु । 3 नीपाति ।

कमलाजीक गीत मालवरागे--३

जय जय[4] कमला विमल तुअ वारि[२१] ।
[२२]विधु-भगिनी जे उदधि-[२३]कुमारि ॥
फोड़ि पहाड़ धार बह नीर ।
दरस परस[२४] जल हर सभ पीर ॥
[२५]ताल सरोवर खण्डम कारी ।
... ...[5]
... ...

(श्लोक)

शाके वेद-षडद्रि[6] ब्रह्म-मिलिते मासे शुभे माधवे,
[7]पक्षे स्वच्छे सु सुधाकरस्य दिवसे चन्द्रस्य [8]ताते तिथौ ।
गौरी-[9]शम्भु-विवाह-सुत्सव-कथा प्रारभ्य भाषाकृतां
काम[10] नाटकनृत्ययोः कथ्यते[11] गौरी शिवः पातु वः ॥१॥

पुनरपि मालव रागे – ४

ग्रह[२६] सत संवत महिम[12] हजार ।
एक कमी दए करब विचार ॥

१७६४ शाके वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, सोम दिन, सप्तमी तिथि मे गौरी-शंकर विवाहोत्सव-कथा कें भाषामे प्रारम्भ कय नाटक ओ नृत्य मे यथेच्छरूप सँ कहैत छी ओ गौरी-शंकर अहाँलोकनिक रक्षा करथु ॥१॥

२१—जल । २२—चन्द्रमाक बहिन (कमला = लक्ष्मी ओ चन्द्रमा समुद्र सँ बहरायल छथि) । २३—समुद्रक पुत्री । २४—जलक दर्शन ओ स्पर्श सभ पीड़ा कें दूर कय दैछ । २५—तड़ाग । २६—नओ (ग्रह) सय ओ एक हजार= १९०० मे एक कमी कय = १८९९ संवत् ।

4 - जै जे । 5 - (खण्डित) । 6 - षडाद्रि । 7—पौते । 8—तातस्तिथौ ।
9 शम्भुब्राह उत्सवकथा प्रारम्भ भाषाकृतं । 10—कामं । 11—कथ्यती ।
12—महिति ।

माधव[२७] मास पच्छ इजोर ।
[२८]सागर-[13]तिथि दिन सिन्धु-किशोर[२९] ॥
मन दय बुझब सकल मतिमान ।
मास साल तिथि दिन प्रमाण ॥
कान्हाराम सुमरि जगदम्ब ।
गौरिस्वयंवर कैल आरम्भ ॥

दोहा

विमल[३०] वंश 'गढ़कब' विदित, कायस्थ मैथिल जान ।
हलधर दासक तनय[३१] जो कान्हाराम मम नाम ॥७॥
गौरि विवाह उछाह[३२] जत, बरनो चरित बनाय ।
सज्जन जन हों विनति मम, पढ़ब सुनब मन लाय ॥८॥
श्लोक सोरठा छन्द पुनि, दोहा गीत कवित्त ।
मति अनुसार उचार करि, नाम नाटिका नृत्य ॥९॥
(पारवतीक जन्म लिख्यते[३३] ।)

दोहा

दच्छ प्रजापति नृपति भये, जाप दान बड़ कीन्ह ।
भाग दीन्ह सभ देव के, शिवक भाग नहि दीन्ह ॥१०॥
सती दक्ष-[३४]कुमारि तब, गइ देखन मख[३५] दान ।
[३६]जोगानल तन जारेउ, देखि पतिक अपमान ॥११॥
शिव-पद प्रीति पुनीत हित, जन्म लीन्ह पुनि आए ।
निज इच्छा अवतार लिय[1], हिमगिरि सुता कहए ॥१२॥

२७ – वैशाख । २८ सप्तमी । २९ – चन्द्र सोम ।
३० – पवित्र । ३१ – पुत्र । ३२ – उत्साह । ३३ – लिखल जाइछ । ३४ – दक्षक पुत्री सती । ३५ – यज्ञ । ३६–योग सँ उत्पन्न अग्नि मे देह जराय लेल ।

1 – लीय । 13 – तीथि ।

गीत मालवरागे--५

[2]हिमगिरि भवन लेल अवतार ।
हरखित नृपति सहित परिवार ॥
उत्सव बधाव गेल नृपधाम ।
घर घर हरष भरल भरि गाम ॥
सोभा सुभग[३७] देखल गिरिराज ।
विधि[३८] निरमाय सुता देल आज ॥
देव-कन्या जनि लेल अवतार ।
पुलकित[३९] नित कर मंगल चार[४०] ॥
दान देथि कर विप्र[४१] हकारि[3] ।
नित प्रमुदित[४२] चित सुता निहारि ॥
कान्हाराम भन सुमरि भवानी ।
पुरिअ मनोरथ निज जन जानी ॥

छन्द – ६

लीन्ह सति अवतार हेम-गिरिराज भवनहि जाय ओ ।
तह सिद्धि सम्पति सकल सम्प्रद रहे नृप गृह छाय ओ ।।
नित मोद परम आनन्द मङ्गल करत गिरिवरराज ओ ।
तह आय मुनि सभ रास कीन्हो जहाँ शैल-[४३]समाज ओ ॥
बन सुमन[४४] विकसित पवन[४५] निर्मल तहि [४६]हरय त्रयताप ओ ।
आए खग[४७] मृग भूय[४८] गिरि-द करए मोर अलाप ओ ॥

३७ – सुन्दर । ३८ – विधाता निर्माण कय । ३९ – नित्य आनन्दित करैत ।
४० – मङ्गल गायक भाँट । ४१ – ब्राह्मण के । ४२ – आनन्दित मन ।
४३—पर्वतक समुदाय । ४४—फूल । ४५—हवा । ४६— ताहिठाम तीनू ताप (दैविक, दैहिक ओ भौतिक) हरैत अछि । ४७ – पक्षी ओ पशु । ४८ अधिक ।

2 – हेम । 3 – हकार । 4 – छा ओ ।

गिरिराज घर पुर नगर घर घर होव मङ्गलगान ओ ।
कान्हाराम भन[1] समरि मन भल, गिरिजा दिअ वरदान ओ ॥

दोहा

हेमत मनाइन सहित नित, हरखित रहे अवास ।
सुतारूप अपरूप[४९] लखि, दिन दिन बढ़त हुलास ॥१३॥
[2]ताहि समय रिखि नारद, मुनि किन्हो परवेस ।
ब्रह्मभवनसौं गमन करि, चले जहाँ अचलेस[५०] ॥१४॥

नारद प्रवेशक गीत मालवरागे--७

देल परवेश नारद मुनि सूनि ।
प्रमुदित[५१] हेमत-नगर[५२] मन गूनि ॥
दण्ड कमण्डल कर, कच[५३] सेत ।
हरखित[3] मुनि गेल राजनिकेत[५४] ॥
देखितहि नृप मुनि[५५] लेल सनमानि ।
दिव्य आसन बैसाओल आनि ॥
चरणोदक लेल पैर पखारि ।
मन्दिर सकल छिंचाओल[५६] बारि ॥
नारि सहित नृप कैल प्रणाम ।
धन्यभाग मोर मुनि[4] एल धाम[५७] ॥
नृप दुहिता[५८] तब लेल मङाय ।
मुनि पद बन्दन देल कराय ॥
मुनि ! सरवज्ञ[५९] जगत हितकारि ।
कहिय सता गुन-दोष विचारि ॥

---

४९ - पुत्रीक अपूर्व रूप देखि । ५० - पर्वतराज = हिमालयरूप ।
५१ - प्रसन्न । ५२ - हिमालयक नगर । ५३ - केश उज्जर । ५४ - राजभवन ।
५५ - नारदमुनिक सम्मान कयल । ५६ - छिड़िचत कयल । ५७ - घर । ५८ - पुत्रीकेँ ।

---

1 - मन मन सुमरि गिरिजा । 2 - तहि । 1 - हरखीत । 2 - मुनिक जगाय ।

करण कान्हाराम एह पद भान ।
नारद कहय वचन परमान ॥

(नारद मुनिः[६०] कथयति मालवरागे)--८

नारद मुनि जान सब नाम ।
से कोन ठाम जहाँ ने पयाम[६१] ॥
तीनहु लोक हमर संचार ।
केओ नहि देखि मोहि नेवार[६२] ॥
अतए जाइ सुनिअ जे कान ।
गोए[६३] ने धरिअ करिअ बखान ॥
से सुनि सबहि मानब रोख ।
शुद्ध स्वभाव हमर कोन दोख ॥
चरचा हमर होअ सब ठाम ।
उचित कहिय होअ तेँ [1]दुरनाम[६४] ॥
करण कवि कान्हाराम भान ।
सुपथ कहिय कुपद[६५] कए मान

(पुनः[६६] नारदः गीतं गायति केदार रागे) --९

अयलहुँ तेँ तुअ धाम राजा, अयलहुँ तेँ तुअ धाम हे ।
सुनल कान गिरिराज [६७]सुता भेलि, तेँ मन भेल [६८]अभिराम ।
धनि कृतारथ[६९] भेलहु हेमत [७०]रिखि, नारद मुनि मोर नाम ॥

---

५९ - सर्वज्ञ । ६० - नारद मुनि मालवरागमे कहैत छथि ।
६१—प्रयाण (यात्रा) करैत छथि । ६२ – निवारण कय सकैछ (रोकि सकैछ) ।
६३ – गुप्त कय । ६४ दुर्यश । ६५—अधलाह बात । ६६—फेर नारद गीत गबैत छथि । ६७—हिमालयकेँ पुत्री भेलनि अछि । ६८—सुन्दर । ६९—धन्य ।
७०—हिमालय ऋषि।

---

1 दूरनाम।

सोभा सुभग सकल छवि मोहिनि, जोहल जगत समाम ।
एहनि सुलच्छनि दोसर न देखिअ, गाव करण कन्हाराम ॥

छन्द--१०

बिहुसि गूढ़[७१] मृदु बचन मुनि कह, सुनिअ नृपति विचार यो ।
गुन-खानि[७२] परम सयानि[७३] भगवति, आय लेल अवतार यो ॥
नाम उमा भवानि गौरी, सुभग सता तोहर यो ।
सुनि गिरिपति सहित दम्पति, कैल मन उद्‌गार यो ॥
दुइ चारि दोख बिचारि नारद कैल पुनि अनुसार यो ।
पितु-मातु-हिन[७४] वर[1] दीनता अति, घर न कुल परिवार यो ।
नगन[७५] जटिल[2] अकाम[७६] सब खन, अशुभ भेख अपार यो ।
एहन नर घर होएत गिरिजहि, [3]विधि से लिखल कपार यो ॥

दोहा

पुनि लक्षन गिरिराज सुनु, कहौं मैं हृदय बिचारि ।
अचल हिनक अहिवात जग, परम पिआक पियारि ॥१४॥

हेमत[4]-मनाइनि-विलापगीतं गायति--११

नारद वचन झूठ नहि रे जिउ सत्य कै जानी ।
दम्पति सहित विकल भए रे गौरी गुन खानी ॥
सुभग सुकोमलि [७७]दुलहि रे विहि [७८]सिरिजल आनी ।
तनिका लिखल बर बाउर[७९] रे विधि मति भुलानी ॥

७१ - गूढ़ (गम्भीर) । ७२ - गुण सँ भरल । ७३-चतुरा । ७४ - पिता ओ माता सँ हीन वर । ७५ - नाङट । ७६ - कामना सँ हीन ।
७७—पुत्री । ७८—विधाता आनि कय बनाओल । ७९—बताह ।

1 - हिम दीनता । 2 - जटोल । 3 - विधि लिखल । 4 - हेमत ।

सखि सङ्ग उमा भवन रह रे मैना तहाँ जाई ।
देखि दुलहि पुलकित मन रे जल दृग-दोउ[८०] छाई ॥
कान्हाराम मन मन दय रे सुनि हेमत-पियारी ।
त्रिभुवनपति उमापति रे सब सोक निवारी[८१] ॥

गीतिका छन्द - १२

जत कहल नारद नृपति कें तत सुनल गौरी कान हे ।
झूठ होए न वचन मुनिकेर विधि-[८२]तनय सब जान हे ॥
शिव चरण प्रीति पुनीत चित धरि मिलन कौन धरान हे ।
एहि सोच धबखल रहहि गिरिजा सङ्ग सखी नहि जान हे ॥
धरि [८३]धीर कहि गिरिराज, सुनि ! सुनु करिअ कौन उपाए हे ।
कहहि नारद सुनिअ हेम[८४] गिरि[1] लिखल मेटल न जाए हे ॥
जे वरनि वरगुन कहल हम से मिलत गौरिहि आए हे ॥
कहौं एक उपाए करि जौं होएब इश्वर सहाए हे ॥
(पुन: [८५]नारद: कथयति । गीतं मालवरागे) १३

जे वर दोख[८६] सब कहल बखानि ।
से लक्षन देखिअ सुलपानि[८७] ॥
तपोबल तप कर सुता तोहारि ।
मिलिहहि वर सुन्दर त्रिपुरारि[८८] ॥
साहस सिद्धि होए सबठाम ।
करय उमा तप पुर मनकाम ॥
वर-गुन अविस[८९] देखिअ जग माँह ।
शिव छाड़ि गौरी दोसर नहि नाह ॥

८० — दुनू आँखि मे नीर भरल । ८१—दूर कयल ।
८२ - ब्रह्माक पुत्र नारद । ८३ - धैर्य धारण कय । ८४ - हिमालय । ८५ - फेर नारद कहैत छथि । ८६ - वरक दोष । ८७ - महादेव मे ।

1 : हेमकर ।

कृपा-सिन्धु वर दानी महेश ।
भवन चलल मुनि कहि उपदेश ॥
करण कान्हाराम एह पद भान ।
नारद वचन करिअ परमान[९०] ॥

दोहा

गिरिजहि आसिख दीन्ह मुनि, सुमरि [1]शङ्कर नाम ।
[2]सोचओ [९१]संशय तेजि नृप, चलि गमने निज धाम ॥१३॥

(गीतं [९२]मनाइनि गायति) १४

[९३]कन्त एकान्त बजाए, मनाइनि पूछल ।
कहिअ नाथ ! मुनि बात, हम नहि बूझल ॥
घर वर कुल परिवार, नीक जओं पाबिअ ।
गौरी जोग वर होए, विवाह कराबिअ ॥
गौरी कुमारि रहथि, से बरु सहब ।
बूढ़ भिखारि कुभेष[९४], से नहि करब ॥
प्राण-पिआरि दुलारि उमा पहु जानिअ ।
तेहन करिअ वर जोहि देखि सुख मानिअ ॥
ई कहि हेमत[९५]-पिआरि, पिआपद[९६] गहल ।
सहित सिनेह [९७]गिरीश, वचन सब कहल ।
सोच बिसारि पिआरि, राम सुमरु मन ।
से करिहथु कल्यान, कान्हाराम भन ।

(गीतं [९८]राजा कथयति केदाररागे) १५

जओं तोहि बेटीक नेह । रानी हे, कहिअ सिखाबहु सेह ॥
तप जओं करथु भवानि । रानी हे, तखन मिलत सुलपानि ॥

८८ = महादेव । ८९ = अपरिमित (अत्यधिक) । ९० = विश्वास ।
९१—संशय = सन्देह । ९२—गीत मनाइनि गबैत छथि । ९३—पतिके । ९४—अधलाह वेष मे ।

1—शंकर नाम । 2—सोचओ ।

ताव न मेटत कलेस । रानी हे, बिनु परसन्न महेश ॥
नारद कहल विचारि । रानी हे, वर गुन[९९] निधि त्रिपुरारि ॥
सुनि पति वचन सोहाए । रानी हे, तुरित[१००] गौरी[१] पहँ जाए ॥
देखि भरल दृग[२] पानि, रानी हे, गोद बैसाओल आनि ॥
छन छन लेअ उर लाए । रानी हे, प्रेम सँ कहल न जाए ॥
करण कान्हाराम भान । रानी हे, जग जननी सब जान ॥

छन्द १६

तब जानि परम सेयानि[३] गिरिजा, बोलि कोमल बैन[४] यो ।
हम राति सपना देखल जननी, कहिअ से सुनु ऐन यो ।
विप्रवर घर आय हमरे, कहल तप करु जाए यो ।
देवरिखि जत कहल प्रथमहि, सत्य वचन दृढ़ाए[५] यो ।
पिता मातुहि भाव मन तप, करी दोख [६]नसाए यो ।
एहन सपन [७]निशि[1] देखल, माता, करण कान्हराम गाव यो ॥

पुनः[८] पार्वती गीतं गायति-१७

तपबल[९] सृष्टि रचल विधि रे, विष्णु जगदानी ।
तप बल शम्भु[2] संघारहु[१०] रे, महिधर[११] अहि पानी ॥
तप अधार निब हय जग रे, तप करहु भवानी ।
[3]ई कहि विप्र गमन करु रे, सुनल मन जानी ॥

९५—हिमालयक प्रिया । ९६—पतिक पएर । ९७—पर्वतराज । ९८—गीत राजा कहैत छथि । ९९—वरक गुनक खजाना थिकाह महादेव । १००—शीघ्र । १—गौरीक लग । २—आँखि मे नोर । ३—चतुरा । ४—वचन । ५—निश्चित कय । ६—नाश कय । ७—राति मे । ९—तपस्याक बल सँ । १०—संसारक संहार करैत छथि । ११—पृथ्वीकेँ धारण करैत छथि सर्प । (शेषनाग) ।

1—निशि हम देखल । 2—सेहो । 3—ई ।

सुनितहि सोक विकल भेलि रे, भय नागरि१२ रानी ।
नयनि नोरह् बहल सब रे, सपना से बखानी ॥
मातु पिता समुझाओल रे, बहु विधि ⁴अनुमानी ।
करय चललि तप दुलहि रे, कान्हाराम बखानी ॥

छन्द १८

पितु मातु प्रिय परिवार परिजन नगर जत नर नारि यो ।
विकल सोकाकुल ⁵सबहि दृग१३, बरिस जलधर वारि यो ॥
देवमुनि पुनि आय सबहि, बुझाय कहल संवाद यो ।
पारवती तदा संकर भेटिअ भेटिअ⁶ सबहु विषाद१४ यो ॥

(तपोवनं१५ पार्वती गच्छति । तस्य गीतं गायति मालवरागे-१९)

हेमगिरिकुमरि सुमरि महेस१६ । तपोवन चललि तपस्विनि भेस ॥
मनिमय भूषण देल नड़ाए । अङ्ग विभूति लेल लगाए ॥
पाट १७पटम्बर पहिरन छाड़ि । पहिरि बघम्बर भेलि तैआरि ॥
सुललित जपन जोग जपमाल । कर१८ उर पहिरि लेलि ततकाल
प्रिय परिजन पितु मातु बिसारि । करय चललि तप राजकुमारि ॥
गई तहाँ जहाँ विपिन१९ निकुञ्ज । बैसि करए लागलि २०तपपुञ्ज ॥
फिरि आइलि सङ सखी-सहेलि । करय कठिन व्रत उमा अकेलि ॥
कबहु कबहु फल⁷ मूल गरास२१ । कबहु⁸ करय व्रत करि उपवास ॥

१२—बुधियारि ॥
१३ – आँखि मेघ जकाँ जल बरसय लागल । १४ – दुःख । १५ – पार्वती तपोवन जाइत छथि । तकर गीत गबैत छथि नर्त्तकलोकनि मालवराग मे । १६ – महादेवक स्मरण कय । १७ – पटोर रेशमी वस्त्र पहिरन छोड़ि । १८ – हाथ ओ छाती मे । १९ – वनक लतागृह मे । २० – ढेर तपस्या । २१ भोजन करथि ।

4—सनुमानी ।
5 – सब दृग । –०।7,०।8 – कबहुक ।

तन सुख बिसरि तपहि मन लाग । नित⁹ नूतन सिव-पद अनुराग ॥
करण कन्हाराम मन गन लाए । दरसन देब सिवशङ्कर आए ॥

दोहा

गई तपोवन गौरि जब, बैठी ध्यान लगाय ।
करन लगी तप जोगव्रत, हरपद प्रीति दृढ़ाय२२ ॥१७॥

पुनः गीतं गायति मालव रागे—२०

भमि२३ भमि विपिन२४ तोड़ल दलफूल । अनेक कुसुम२५ दल, छोड़ि ओड़हुल ॥
बेलि चमेली कुन्द नेबार२६ । तोड़ल श्रीदल२७ साकि अंगार२८ ॥
धूप दीप नैवेद कर तूल । पुजिअ सदाशिव होथि अनुकूल ॥
करिअ कठिन¹ व्रत गौरि त्रिकाल । बरिअ आय हर दीन-दयाल ॥
साधन विपुल२९ कएल भवानि । अमित३० बरष नहि जाए बखानि ॥
आय तपन शिव दरसन देल । तप-सिद्धि गौरि तोहर अब भेल ॥
मन धरु धीर वचन सुनु आब । दरसन देब देखि तुअ भाव ॥
कन्हाराम भन सुनि उपदेश । शिव महेश, जे हरत कलेश ॥

दोहा

३१अन्तरजामी समुझि चित, बूझे गौरि³ कलेश ॥
चले तपोवन मुदित मन, आरत३२-हरन महेश ॥१७॥

२२– स्थिर कय । २३—घूमि घूमि । २४—वन मे । २५—फूल ओ पात ।
२६—कुन्दक समानाकार फूल नेबारि । २७—बेलपात । २८—... ... ... ।
२९—पर्याप्त । ३०—असंख्य । ३१—अन्तर्यामी=मनक बात बुझयबला ।
३२—दुःख दूर कयनिहार ।

9 – नीत ।
1—कठीन । 2—बखान । 3—गौरी ।

श्री महादेवक तपोवन प्रवेश गीतं मालवरागे—२१

दीन बन्धु कृपाल महेस । देल परवेस उमा जेहि देस ॥
सोभित तिलक भाल[३३] ससि रेख । नगन[३४] जटील अमंगल भेस ॥
रुण्डमाल जयमाल कराल । भूत - प्रेतगन संग बैताल ॥
डिमि डिमि डमरु बाज सब काल । पट बिहून[३५] कटि[३६] केहरि छाल ॥
असुभ भेस सब लेल बनाय । बसभ वाहन चाढ़ तपोवन आय ॥
जटा - जूट - सुरसरि[३७] नीर । देखल उमा हरल सब पीर ॥
पारवती सिव दरसन देल । कहल तोहर अब तप सिद्धि भेल ॥
कन्हाराम कह धरु बिसवास । बर दए सिव चललाह कैलास ॥

पुनः गीतिका छन्द—२२

आय बर हम होएब तोहर छोड़हु जप तप ध्यान हे ।
जाहु पितु गृह तुरित[३८] गिरिजा देल तरि बरदान हे ॥
सिवक बानी सुनि भवानी परम हृदय हुलास हे ।
कन्हाराम भन बर दय संकर गमन कैल कैलास हे ॥

[1]छन्दोऽर्थे [३९]गीतं आसावरीरागे—२३

बर देल तोहि हम आजे । सफल करब सुभ काजे ॥
तेजहु कठिन[2] तप आबे । कौल हरख देखि भावे ॥
जाहु तुरित पितु[४०] गेहे । [3]कुसल तोहर सिनेहे ॥
उमा सुनि [4]आनन्दे । जनि मिलु कुमुदिनि चन्दे ॥
मानस बढ़ल हुलासे । पुरल सकल मन आसे ॥
कन्हाराम पद-भासे । सिव कैल गमन कैलासे ॥

३३—कपार पर चन्द्रमाक रेखा (अर्धचन्द्र)। ३४—नग्न=नाङट।
३५—वस्त्रविहीन। ३६—डाँड़ मे बाघक छाल। ३७—गंगाक जल।
३८—शीघ्र। ३९—छन्दक अर्थमे गीत। ४०—पिताक घर।

---

1 - छन्दार्थ। 2 - कठीन। 3 - कुशल। 4 - अनन्दे।

पार्वती गीतं गायति आसावरीरागे—२४

आज - सुफल तप भेला । हरि हरि[४१], सिव दरसन मोहि देला ॥
पुरुब[5] प्रीति रिति जानी । परसन भेल सुलपानी[४२] ॥
मेटल दुसह कलेसे । बर देल आय महेसे ॥
कन्हाराम पद भाने । मुनिक बचन परमाने ॥

(पार्वती देह साधना कय तपस्या करथि। तस्य गीतं मालवरागे-२५)

बरख हजार कन्द मुल भोजन, साक[४३] बरख सत खाए ॥
किछु[6] दिन [४४]बारि पीबि[7] तप कैलन्हि, ए बिधि दिवस गमाए ।
किछु दिन भोजन सब परिहरलन्हि[४५], तप कर पीबि बतासे[४६] ।
एहन कठिन[8] तप देखि उमाके, बानी भेल अकासे[४७] ॥
तब सिद्धि तोहर मनोरथ सफलित, भेल[9] कृतार्थ भवानी ।
कन्हाराम भन सुनिअ उमा मन, [10]आब मिलब सुलपानी ॥

दोहा

गगन[४८]-बानि अनुमानि जिअ, सत्य करिअ बिसवास ।
पिता बोलाबन आब जब, तप तेजि जाहु अवास[४९] ॥१९॥
मिलिहैंहि आय सप्तरिखि, तब जानब परतीत[५०] ।
सुनत गगन[५१] बिधि - बचन जब, पुलकित उमा सुप्रीति ॥२०॥

४१—अहो ! ४२—महादेव। ४३—सात सय वर्ष क। ४४—जल।
४५—छोड़ि देलनि। ४६—हवा। ४७—आकाश-वाणी भेल।
४८ - आकाशक वाणी। ४९ - घर। ५० - विश्वास। ५१ - आकाश मे ब्रह्माक वचन।

---

5 - पुरुब। 6 - किछु। 7 - पिबि। 8 - कठिन उमा तप देखि विधाता, भेल अकासक बानी। 9 - सुनित। 10 - अब।

(सतीक मरणोपरान्त श्री महादेव समाधि लगाय रहथि ।
तस्य गीतं[1] गायति आसावरी रागे)—२६

सतीक जखन परिनामे[५१] । सिव मन[3] भेल विरामे[५३] ॥
जपन लागु हरिनामे[५४] । सुनहि राम[५५]-गुण-ग्रामे ॥
रहहि सीव [५६]सुखधामे । तेजि मोह मद कामे ॥
सुनहि ज्ञान [५७]मुनि ठामे । सब विधि रहहि अरामे ॥
राम नाम गुन गाने । सदा [५८]मगन मन ध्याने ॥
करण कन्हाराम भाने । भक्ति-विवस भगवाने ॥

दोहा

बहुत दिवस जब बितित[५९] भय, एहि प्रकार बहु काल ।
सङ्कर प्रेम प्रतीत बुझि, प्रकटे राम दयाल ॥२१॥

(श्री रामचन्द्रक[4] श्रीसिव [६०]पहँ आगमन । तस्य गीतं
आसावरीरागे)—२७

सुनु सिव ओ रे, [६१]कह [5]हरि । तुअ सम के अस तप [6]करि ॥
बहु विधि ओ रे, सराहल । सिव निज प्रेम निवाहल[६२] ॥
पुनि हरि ओ रे, [7]बुझाओल । गौरीक जन्म सुनाओल ॥
गुन सब ओ रे, गौरी कर । कहल राम सुनल हर ॥
बिनती ओ रे, सुनिअ हर । जाए होइअ गौरीवर ॥
एह वर ओ रे, माँगिअ । कन्हाराम कह मानिअ ॥

---

५१ - परिणाम (अन्त) । ५३ - वैराग्य । ५४ - विष्णुक नाम ।
५५ - रामक गुण समूह । ५६ - महादेव अतिशय सुख मे ।
५७ - मुनिक स्थान मे । ५८ - तल्लीन । ५९ - व्यतीत । ६० - पार्श्व (लग) ।
६१—रामचन्द्र कहल । ६२ - प्रेमक निर्वाह कयल ।

---

1 - श्रीसं सतीक मरणान्त । 2 - ० । 3 - मन । 4 - श्रीरामचन्द्र श्रीसिव ।
5 - हरी । 6 - करी । 7 - बूझा ।

दोहा

रामचन्द्र वर दइ सिव, तब आये कैलास ।
[६३]सप्तरिखी तेहि समय महँ[६४], आय मुदित सिव-पास ॥२२॥
कहे महेस रिखेस[६५] सुनु, तपोवन करहु पयान[६६] ।
उमा प्रीति परतीति लखि, आय कहहु परमान ॥२३॥

(सप्तरिखि तपोवन प्रवेश गीतं मालव रागे)—२८

देल परवेस सप्तरीखेस[६७] । जहाँ रह उमा तपस्विनि भेस ॥
दण्ड कमण्डल कर पुनि वेद । चलल बुझए रिषि गौरीक भेद[६८] ॥
कह रिषि गौरि[8] ! सुनहु मन लाय । केहि कारण बल तप कर आय ॥
काहि मनावहु, की मन तोहि । सरये वचन उमा कहु मोहि ॥
सुनि मुनिवचन उमा तब बाज । कहिनी गूढ़ कहत होअ लाज ॥
नारद आय देल उपदेस । तें तप करि पति होथि महेस ॥
बिहुँसि उठे मुनि परम सुजान । नारद वचन सुनय जे कान ॥
ताहि कबहु नहि हो कल्यान । करण कन्हाराम एह पद भान ॥

छन्द २९

होहि परम भिखारि सो नर, सुनय नारद बात यो ।
दीन्ह[9] सति[६९] उपदेस, पुनि फिरि, भवन खाय ने भात यो ॥
परम कुटिल कठोर कपटी, जगत[७०] सजन कहाय यो ।
वचन[10] ताके मानि गिरिजा, उमत[७१] वर हित लाय यो ॥

(पुनः [11]सप्तर्षिः भवानीं प्रति गीतं [७२]कथयति) ३०

कुल परिवार न गेह[७३], दिगम्बर [७४]सबलन हे ।
विखधर धर लपटाए, कुभेख[७५] निरलज[12] तन हे ॥

६३—सप्तर्षि । ६४—मध्य । ६५ - हे ऋषीश (ऋषिराज) । ६६ - यात्रा ।
६७ - सप्तर्षिराज । ६८ - गूढ़ अभिप्राय । ६९ - सती के । ७० - संसार मे सज्जन कहाय । ७१ - उन्मत्त । ७२ - फेर सप्तर्षि भवानीक (पार्वतीक) प्रति गीत कहैत छथि । ७३ - घर मे । ७४ - नाङट । ७५ - अधलाह वेश ओ निर्लज्ज देह ।

---

8 - गौरी । 9 - सति दीन्ह । 10 - ताके वचन । 11 - सप्तरिखि । 12 - निर्लज ।

सतत मसानहि वास, पास रह भूतगन हे ।
निरगुन परम भिखारि, न नारि[७६] दरद मन हे ॥
एहन उमत वर लागि, कठिन व्रत कएलहु हे ।
से वर कए सुख कौन, विपति गमयबहु हे ॥
सती विवाह सिव कएल, जगत सब जानल हे।[13] ।
ताहि देल [७७]अवडेरि, फेरि नहि आनल हे ॥
सुख सोअत[७८] नहि, कबहु, भीख रह मंगइत हे ।
एकसरि रहबहु मौन काज सब करइत हे ॥
मुनिक वचन सुनि उमा, रहलि बिहुसि मन हे ।
सिव पद प्रेम चित लाय, करण कन्हाराम भन हे ॥

पुनः गीतं गायति—३१

हमर कहल उमा मानहु हे, वर देब मैं आनी ।
तीनि लोक छवि मोहित हे, वर गुन निधि आनी ॥
सुन्दर सुभग सुलच्छन हे, जेहि वेद[७९] जस गावै ।
पुर बैकुण्ठ निसीत[८०] हे, सुरमुनि सिर नावै ॥
दोख रहेत गुनसागर हे, से बड़ तप पावै ।
से वर आनि मिलायब हे, देखि मन भावै ॥
कान्हाराम भन मन दय हे, सुनल मुनिबानी ।
नीक देल उपदेस मोहि हे, हँसि बोललि भवानी ॥

पार्वती कथयति गीतं आसावरीरागे—३२

बोली बिहुसि भवानी । मुनि हे, सुनिअ तोहि बड़ ज्ञानी ॥
हेम[८१] उपल भए जाए । मुनि हे, [14]हठहि न प्रीति [८२]दुराए ॥

७६ - नारीक प्रति मन में दर्द नहि छनि । ७७ - उपेक्षा कयल । ७८ - सुतैत छथि । ७९ - जनिक यश वेद गबैत अछि । ८० - निश्चित (स्थित) । ८१ - सोना बरु पाथर भय जाय ।

13 - (सब चरण मे 'हे' नहि अछि) । 14 - हठ न ।

नारद वचन न त्यागे । मुनि हे, सिव पद चित अनुरागे ॥
अवगुन भरल [८३]महेसे । मुनि हे, तनि पद प्रीति हमेसे[८४] ॥
विष्णु गुन-निधि धामे । मुनि हे, तनिक न मोहि किछ कामे ॥
कन्हाराम कवि गावे । मुनि हे, सिव छाड़ि दोसर न भावे ॥

गीतिका छन्द—३३

प्रथम मुनिवर आय हम[८५] पह, दिलहु जे उपदेस हे ।
सेहु सुनि मन आनि करिलहुँ, तेहन तपव्रत वेस हे ॥
सम्भु सौं हम जन्म हारल, अब न दोसर विचार हे ।
हठ तेजहु सठता[८६] वचन, ता सब कहिय बारम्बार हे ॥
घटक काज बड़ चटक चाहिअ आलस काज नसाए हे ।
जगत मह[८७] कत जे वर कन्या, करिअ आय मिलाय हे ॥
कन्हाराम भन मन कयल दिढ़ व्रत, उमा नारद [८८]बाक हे ।
रहब घर कुमारि बरु हर[८९], बिनु ने आनहि ताक हे ॥

दोहा

पगुपरि[९०] मुनि कर जोरि कह, सुनिअ मातु जगदम्ब ।
पिता भवन अब गमन करु, होइछ बड़े विलम्ब ॥२४॥
सिव पद प्रीति पुनीत लखि, गौरी मनहि रिखेस[९१] ।
गये हेमाचल पास तब, कहि उमाक कलेस ॥२५॥
सुनि मुनीस के वचन नृप, गये तपोवन धाय ।
करि बिनती गृह आनेऊ, तुरित[९२] उमाकें बोलाय ॥२६॥

८२ - प्रेम किन्हुँ नहि दूर होइछ । ८३ - महेश । ८४ - हमेशा (सतत) । ८५ - हमरा लग । ८६ - कपट । ८७ - मध्य । ८८ - वचन । ८९ - महादेवक बिना । ८८—बरन । ८९—महादेवक बिना । ९०—पाएर पड़ि । ९१—मुनिराज । ९२—तुरत ।

(पार्वती[६३] भवनं गच्छति । तस्य गीतं गायति) ३४

करि विनती गिरिराज, उमा लय आयल हे ।
हरखित भेलि मनाइनि, नयन जुड़ायल हे ॥
सखि सब मिलि पुनि गौरी, अंकम[६४] लाओल हे ।
हरख नयन ढर नोर[1], देखि सुख पाओल हे ॥
सुनल नगर नर नारि, सबहि उठि धाओल हे ।
पुलकित परम आनन्द, उमा उर[६५] लाओल हे ॥
प्रेम-मगन दिन-राति, सखी[2] सभ रमथित[६६] हे ।
करहि कुतूहल[६७] खेलि, विविध विध गमथित[६८] हे ॥
नृपति बुझाब मनाइनि, अति प्रिय भाषि हे ।
गौरिक करिअ विवाह, देखिय भरि आँखि हे ॥
कन्हाराम भन सुनि[3], नृपति तब भाख हे ।
धरु धैरज मन लाय, करत अभिलाख हे ॥

दोहा

सप्तरिखि सिव [६९]पह गये, उमा प्रीति कहु जाए ।
सुनि सिनेह सिव गमन [4]कर, मुनि निज भवन सिधाए ॥२७॥

(हेमत-रिखि[1] -नगरे श्री महादेव-प्रवेशः ।
तस्य गीतं गायति मालवरागे) - ३५

धाएल सङ्कर विकट धरु भेस । देल गिरिराज-नगर परवेस ॥
भाल जलक तिलक[2] राकेस । रूप भयङ्कर उर[3] पर सेस ॥

६३—पार्वती घर जाइत छथि । तकर गीत गबैत अछि । ६४—गोद में ।
६५—छाती । ६६—आनन्दमय खेल करैत । ६७—अद्भुत । ६८—वितबैत ।
६९—शिवक लग । १—हिमालय-राजर्षिक नगर में श्रीमहादेवक प्रवेश होइछ । तकर गीत गबैत अछि । २—तिलकक रूप में चन्द्रमा ।
३—छाती पर शेषनाग ।

1—लोर । 2—सभी । 3—सुनि । 4 - गमन भौ ।

ठाढ़ भेल हर, द्वार गिरीस । डमरु बजाब बाज नहि ईस[४] ॥
बाघम्बर पट लेल अछाए । बैसल मगन मन धुनी[5] लगाए ॥
खबरि भेल नप - मन्दिल[6] रानि । भिखि लय बहार भेलि कुमरि-भवानी ॥
जाए देखल मुख जोगी अकलेश । उमा चिन्हल, चिन्हल महेश ॥
भिखि न लेअ जोगी रहल निहारि । प्रेम भरलि मन राजकुमारि ॥
कन्हाराम हर बूझि सिनेह । चट उठि गमन कयल निज गेह[५]॥

उमा - विरहगीतं आसावरीरागे—३६

भल हर दरसन देला । किअये विमुख भय गेला ॥
उमा सोचवस[7] भेली । बुझल न संग सहेली ॥
मानस परम अन्देसे । कोन परि मिलब महेसे ॥
विरह विकल भवानी । लखल सखी सयानी ॥
धैरज धरु सुकुमारी[8] । वर आय त्रिपुरारी ॥
सुनि सखि मृदुबानी । मन पुलकित भवानी ॥
पुरब प्रीति मन[9] आनी । चललि सुमरि [६]सुलपानी ॥
करण कन्हाराम भाने । सिव[10] पद धरि मम ध्याने ॥

दोहा

पुरब सकल मनकामना । सिवशङ्कर वर आय ।
मित्र[७] सयाना[11] कहल पुनि, भवन गमन हरखाय ॥२८॥

(श्री महादेव ध्यान लगाय रहथि । तस्य दोहा[12])—
हेमत-नगर सँ गमन करि, सिव कैलासहि आय ।
अचल समाधि साधि रह, बैठे ध्यान लगाय ॥२९॥

४—महादेव बाजन में डमरु बजबैत छथि । ५—घर । ६—महादेवक स्मरण कय ।

5 - धूनी । 6 - मन्दील । 7 - सोवस । 8 - सकुमारी । 9 - प्रीति आनी ।
10 - सिवि । 11 - सयाना अस । 12 - दोहा गीतं गायति ।

गीतं केदाररागे—३७

बैसल सिव समसान ना । करय लागल तप ध्यान ना ॥
सुमरित मन भगवान ना । आन कथा नहि जान ना ॥
बहुत काल बिति गेल ना । असुर ७ प्रकट एक भेल ना ॥

दोहा

ताड़क असुर तेहि समय भय, तेजमन्त बलवान ।
विजय करत सब ठाम फिर, काहु[1] कछु न गुदान ॥

ताड़क असुर प्रवेश गीत मालव रागे—३८

ताड़क असुर लेल अवतार । भुज बल जीतल सकल संसार ॥
तीनि लोक सोक बड़ देल । सुरसम्पत्ति ८ छीनि हरि लेल ॥
मथन असुर अजर तसु देह । हारे सुर भागे छोड़ि गेह१० ॥
विधि ११पह गये अमर१२ अमरेस । जाय कहल सब विपति कलेस ॥
ताड़क दैत्य भेल परचण्ड । तासु प्रताप काप नव - खण्ड१३ ॥
करण कन्हाराम भन मन लाय । धरु धीरज विधि करब उपाय ॥
सुर सुरपति सौं विधि कहय, सुनहु एक परकार ।
सम्भु - तनय षटबदन१४ तें, होय असुर - संहार ॥३१॥

विधि उक्ति । गीतं देशाखरागे—३९

कह विरञ्चि१५ सुनिअ सुरेसे१६ । ईश्वर करथ सौं हरत कलेसे ॥
पितु गृह जाय सती तेजु देहे । हिमगिरि भवन जन्म लेल सेहे ॥
तपोवन तप कयल राजकुमारी । हर बर लागि सहे दुख भारी ॥

७—चातुरा । ८—दैत्य ।
८—देवताक सम्पत्ति छीनिकें हरण कय लेलक । ९—नष्ट नहि भेनिहार ।
११—विधाताक लग । १२—देवता ओ देवराज । १३—पृथ्वीक नवो द्वीप ।
१४—कार्त्तिकेय । १५—ब्रह्मा । १६—इन्द्र ।

1—काहु । 2—सम्पति छिनि ।

हर समाधि बैठे समसाने । ताहि छुडाओय कोन घराने ॥
मदन पास जाइअ सुरराजे । हर मन छोह१७ करय होय काजे ॥
करण कन्हाराम भन परमाने । एह उपाए छोड़ि दोसर न आने ॥

दोहा

सुर सुरपति विधि वचन सुनि, गये मदन१८ पह धाय ।
विविध भाँति अस्तुति करि, विपति कहो बिलखाय ॥३९॥

छन्द—४०

कहहि सुरपति सुनिअ रतिपति१९, करिअ मोर उपकार यो ।
ताड़कासुर देत सुर दुख, करय बड़ परहार२० यो ॥
सम्भु - सुत२१ तह मरत अरिजन२२, तकर करिअ निगाह यो ।
जाय हर मन छोभ२३ करिअ तब, करब शङ्कर ब्याह यो ॥

सोरठा

सुर स्तुति किन्हे जाय भेटे मनसिज२४ आए तब ।
विपति सुरन सुनाय, मदन२५ कहे मोहि कुसल नहि ॥३३॥

मदनः२६ कथयति गीतं केदार रागे—४१

करब काज तोहार, सुरपति । परम धरम उपकार ॥
परहित२७ जाय जओ प्राण, सुरपति । सदगति देहि भगवान ॥
धीरज धरिअ सुरेश[1], सुरपति । छोभित करब महेस ॥
करण कन्हाराम भान, सुरपति । लेल मदन धनु बाण ॥

(मदन धनु - सर लय श्री महादेवक ध्यान तोड़य[2] गच्छति,
तस्य [3]छन्दः)—४२

जब चले श्री रतिनाथ २८ । लय सुमन - सर२९ धनु हाथ ॥

१७—क्षोभ (बेचैनी) । १८—कामदेवक लग दौड़िकें । १९—कामदेव ।
२०—प्रहार । २१—शिवक पुत्र सौं । २२—शत्रु । २३—विकलता ।
२४—कामदेव । २५—कामदेव । २६—कामदेव कहैत छथि ।
२७—दोसरक कल्याणक हेतु । २८—कामदेव । २९—फूलक बाण ओ धनुष ।

1—सुरेश, छोभित । 2—करय । 3—तोमर छन्द ।

करि हृदय माह् विचार । तब किन्हु बत संसार ॥
मनसिज भयो[4] कोपमान । तब रहा कछु न ठेकान ॥
ब्रह्मचारि ग्रनकार । ताहू उर से[5] मार ॥
करत जप तप जोग । सेउ भूलि [6]भेल रस भोग ॥
काहु न धीरज धरम । भयो ज्ञान तेजि बेमरम[7] ॥
नहि रहा काहु विवेक । सब छोड़ धर्मक टेक ॥
धरनि[३०] धीर नर नारि । भयो काम बस विचालि[8] ॥
[३१]सैल सैलहि धाव । भयो अचल[9] रस भाव ॥
उमरि सुरसरि[३२] नीर । तब मिले सागर तीर ॥
[३३]उर[10] सबहि मदन बिराज । सब छोड़ धीरज लाज ॥
नदी नाल ताल ब । करत संग सधाव ॥
तरु लता सबा निहारि । ओड़ लेन चह [३४]अकवारि ॥
जहाँ जड़नि[३५] की गति ऐस । [11]तहाँ चैतन्य[३६] जन[12] कैस ॥
पशु पक्षी जीव[13] जन्तु । लागू कामक तन्तु ॥
सुर असुर किन्दर[३७] व्याल । अओ भूत प्रेत बैताल ॥
इन्ह दसा क्या कहुँ [३८]बयान । हुय[३९] सदा मदन गुलाम ॥
भओ लोक मदनक अन्ध । सभ छोड़ घर के धन्ध ॥
कहत कवि कन्हाराम । सब बेमत भयो वश काम ॥

[14]छन्दोऽर्थे गीतं आसावरी रागे--४३

सबक विवेक दुरि गेले । काम-बियस सब भेले ॥
जोगी जती तप ध्याने । छाड़ि भूलल रसपाने ।

३० = पृथ्वी पर धैर्यवान । ३१ - पर्वत पर्वते दिस दौड़ैत अछि । ३२ - गंगाक जल । ३३ - सभक हृदय मे ३४—आलिङ्गन । ३५ - अचेतन वस्तु । ३६—चल-निहार जीव । ३७—किन्नर (देवविशेष) ओ साप । ३८ - ई स्टीकरण । ३९ - अछि (है) ।

4 - भयो कोउ कोप 5 - सेर । - गौ । 7- बेमर्म । 8 - बिरवामि । 9 - अचल मन रस । 10 - उर । 11- ० । 12 - जन्य । 13 - जीव, जनि सब लागू । 14—छन्दार्थे ।

रेजल सब सद्ग्रन्थे[४०] । बिसरल सुकृत[४१] पन्थे ॥
वेद विधान बिसारि । प्रेम मगन नर नारि ॥
धनु सर जब लेल मारे[४२] । धीरज जग सँ बिसारे ॥
मदन कयल विपरीति । काहु रहल नहि [४३]प्रीति[15] ॥
निज निज तेज [४४]मरजादे । सबय काम-रस स्वादे ॥
करत कान्हाराम गावे । पुनि जनि हो अस भावे ॥

सोरठा

परम विकल वसि काम, सुर गन्धर्व सिद्ध नर ।
बिसरि रहे हरिनाम, मनसिज[४५] मन सब के हरे ॥३४॥

दोहा

दुइ[16] दण्ड[४६] ब्रह्माण्ड मह, लीला अस कर मार[४७] ।
नारि नारि अस पुरुष कर, नारी[17] पुरुष हकार ॥३५॥

छन्द--४४

दुई परम प्रचण्ड मनसिज, कीन्ह कौतुक[४८] छोल यो ।
जावत हर[४९] पह जाय मनसिज, तावत उठल कलोल यो ॥
तिनहि देखि सकम्प [18]मनसिज, डरय अति चित डोल यो ।
पूर्ववत संसार थिति गति, भेल परम अमोल यो ॥

सोरठा

दुखित भये सब जीव, मदन[५०]-[19]तरासित बाल जिमि ।
डरे काम देखि सीव[20], मनसिज मनहि विचार करि ॥३६॥

४० = उत्तम पुस्तक । ४१ - धर्मक बाट । ४२ - कामदेव । ४३ - धर्म । ४४ - मर्यादा छोड़ल । ४५ - कामदेव सभक मनकेँ हरलनि । ४६ - ब्रह्माण्ड भरि मे दू टा लाठी चलओलनि । ४७ - कामदेव एहि प्रकारक लीला कयल । ४८ - विस्मय प्रस्तुत कयल । ४९ - शिवक लग । ५० —कामदेव सँ तेना डरायल जेना बच्चा ककरो सँ डराइत अछि ।

15— प्रीति । 16—दुइ । 17—पुरुष नारी । 18 - मन मनसिज । 19 —तरसित । 20—सिव ।

फिरत होत अति लाज, करब्यो कौन परकार विधि ।
प्रकट कीन्ह रितुराज[५१], कुसुमित भयो वन सुमन पर ॥३७॥

बसन्तरागे – ४५

रितु समय प्रकट बसन्त सुन्दर, देखि वन मन मोहही ।
वापी[५२] तड़ाग सरोज बिगसित, सुखद सर[५३] सब सोहही ॥
तहाँ गुञ्ज मञ्जुल मत्त मधुकर, हंस सुक[५४] पिक धुनि करी ।
कत नाच गावहि अप्सरागन, मगन मन आनन्द भरी ॥
बह पवन[५५] मन्द सुगन्ध सीतल, मदन ज्वाला बढ़ि चली ।
सबए[21] मन मनसिज[५६] जागे, सुभगता तन अति भली ॥
करि कोटि कला उपाय मनसिज, हारे हीन[५७] [22]सहाञ्जिञ्जाँ ।
अचल सम्भु समाधि छूट[23] न, करत कन्हाराम गाञ्जिञ्जाँ[24] ॥

दोहा

चितवन[25] चहु दिस निरखि कय, देखे बिटप[५८] बिसाल ।
कोपि[५९] चढ़े तेहि दरख पर, किये नयन दुहु लाल ॥३८॥

छन्द – ४६

कैए कत परहार मनसिज छूट न सम्भु समाधि यो ।
दरख पर चढ़ि कए जे मारए, सिवहि[६०] उर सर साधि यो ।
उठे जागि समाधि छूटे, जूटे मदन धाधि[६१] यो ।
चहु ओर नयन उघारि देखे दरख पर अपराधि यो ॥

५१—बसन्त । ५२—बावली ओ पोखरि मे कमल फुलायल । ५३—पोखरि ।
५४—सुग्गा । ५५—हवा । ५६—कामदेव । ५७—सैन्य ओ सहायक ।
५८—बिशाल गाछ पर ५९—क्रोध कय । ६०—शिवक छाती पर शर साधि कैं । ६१—ज्वाला ।

21—भुए । 22—सहाजोञ्जाँ । 23—छूटल । 24—गाञ्जीञ्जाँ । 25—चितवत ।

दोहा

तेसर नयन उघारेउ, कोपे अनल[६२] बहाय ।
चितवन[1] नयन तकाय कय[2], काम भये जरि छाय ॥३९॥
हाहाकार जगत भए[3], भोगी सब पछताय ।
हरखि[4] जोगि जति तप रम, भये अकण्टक आव ॥४०॥
रती सुने[5] पति-मरन सुधि, ब्याकुलि पहुँचलि[6] धाय ।
रोवति [६३]बदति करुणा करति, हरपद लोटति आय ॥४१॥

रति-बिलाप केदाररागे--४७

किअ पहु हरल हमार हे हर, किअ पहु हरल हमार ।
कोन अपराध पहु[7], कयल तोहर दहु, जारि कयलहु पहु छार ॥
तोहे त्रिभुवन पति, जामि नारि गति, बिनु पहु जीवन असार ।
बारि बयस धनि, हरल सिन्दुर मनि, पहु बिनु जगत अन्धार ॥
छन छन महिपर[६४], [8]नयन नीर ढर, करुणा करय अपार ।
रति बिकल तह, सङ्कर सुनि कह, होयत तोहर परकार ॥
धरज धय रहु मिलत तोहि पहु, यदुकुल कृष्ण अवतार ।
तासु तनय रति, होयत तोहर पति, छूटत बिरह दुख भार ॥
नाम अनङ्ग अङ्ग नहि तब लगि, बिनु तन[६५] जीवन संसार ।
कन्हाराम भन, रति मगन मन, चलि गेल अपन अगार[६६] ॥

(सुरपति श्री महादेव[६७] पह गच्छति । गौड़ मालवरागे -४८)

हरक समाधि तोड़ल जब मनसिज, सुरपति[६८] सुनल काने ।
सहित बिरञ्चि[६९]देव सुरपति मिलि, हरि पह कयल पयान[७०]॥

६२—आगि प्रज्वलित भेल । ६३—कनैत बजैत ।
६४—पृथ्वी पर । ६५—बिना देहक जीवन । ६६—घर ।
६७—श्रीमहादेवक लग । ६८—इन्द्र । ६९ ब्रह्मा । ७०—प्रस्थान ।

1—चितवन । 2—कय सो काम । 3—भौ । 4—जोगी जती हरखि । 5—सुनो ।
6—पहुँचि । 7—पहु हम कयल । 8—नहि नयन ।

विष्णु विरञ्चि अमर[७१]अमराधिप[१], सब गेल सिवक समाजे ।

[७२]अन्तरजामि स्वामि सब जानिअ, की कहब हम सब भाखी ।
तदपि विनति करि कहिअ कृपानिधि, जञो मोर अभिमत राखी ।।
सुर गन्धर्व सर्व मन इच्छा, देखिय हरक उछाहे[७३] ।
कान्हाराम भन पुरिअ मनोरथ, करिअ सदासिव व्याहे ।।

छन्दः । देवोक्ति गायति--४६

दीनबन्धु कृपाल सङ्कर, अरज[७४] सुनु मन लाय यो ।
देवर्हीं दुख देत दानव, तकर करिअ उपाय यो ।।
ताड़कासुर प्रबल बल भेल, दर्प चढ़ रण धाय यो ।
समर कए सब अमर आरे[७५], डरे सकल पड़ाय यो ।।
सती जाय जे जन्म लीन्हो, हेमसुता[७६] कहाय यो ।
कठिन तपव्रत किन्हु तपोधन, सम्भु-पति हित लाय यो ।।
तासु पाणिग्रहण कीजै, होइअ देव-सहाय यो ।
तासु सत अवतार षटमुख[७७], हनब दानव जाय यो ।।
दीन के दुख हरण सङ्कर, सरन सब धैल आय यो ।
सरन के प्रभु राखु लज्जा, करण कान्हाराम गाय यो ।।

दोहा

पार्वती तप कीन्ह बड़, तुअ पद प्रीति विचारि ।
अङ्गीकार करि तासु व्रत, दीनबन्धु त्रिपुरारि ।।४२।।
कहे महादेव सुनिअ प्रभु, सहित विरञ्चि[७८] सुरेस ।
आज्ञा सब के करब हम घटक पठाविअ वेस ।।४३।।

७१ - देवता ओ देवराज । ७२ - अन्तर्यामी (मनक बात बुझयवला) । ७३ - उत्साह । ७४ - निवेदन । ७५ - देवता कें डेलओलक । ७६ - हिमालयक पुत्री । ७७ - षण्मुख (कार्त्तिक) । ७८—ब्रह्मा ओ इन्द्र ।

१—रापति ।

हरखे सुर वरखे सुमन[७९], गगन दुन्दुभी बाज ।
सप्तरीखि तेहि समय मह[८०], आये सिवक समाज ।।४४।।

सप्तरिखि-प्रवेश गीतं मालवरागे – ५०

सप्तरिखि भल अवसर जानि । अयलाह जहाँ विधि हरि सुलपानि ।।
कह विधि बचन सुनिअ रिखेस[८१] । हेमगिरि भवन करि परवेस ।।
हेमगिरि भवन गौरी कुमारि । कथा वरिअ दिढ़[८२] वर त्रिपुरारि ।।
घटक चटक परिपञ्च[८३] निधान । ताहि सिखाब दोसर के आन ।।
जाय कथा मुनि आनु मिलाय । लग्न पत्रिका लेब लिखाय ।।
करण कन्हाराम एह पदभान । हरखित रिखि तब कएल पयान ।।

दोहा

प्रथमहि मुनिवर गयेउ तहाँ, जहाँ गिरिराज कुमारि ।
बोले मधुरस बचन तब, हरखित हृदय विचारि ।।४५।।

गीतं आसावरीरागे – ५१

भेल परम विसमादे[८४] । कहय अयलहुँ समादे ।।
सुनु गिरिराजकुमारि । काम[८५] जारल त्रिपुरारि ।।
सुनल न हमर[८६] कहानी । मानल नारद-बानी ।।
तप भेल व्यर्थ तोहारे । आब की करब परकारे ।।
बोली बिहुसित बानी । उचित कहल मुनि ज्ञानी ।।
जारल काम महेसे । तकर न मोहि अन्देसे ।।
कहओ बचन परमाने । सिव छाड़ि गति नहि आने ।।
करण कन्हाराम गावे । सुनि मुनि अति सुख पावे ।।

७९—फूल । ८० - मे । ८१ - मुनिराज । ८२ - स्थिर । ८३ - छल करवा मे पटु । ८४ - दुःख । ८५ - कामदेव कें जराओल । ८६ - कथन ।

सोरठा

देखे[1] हर-पद प्रीति, उमा प्रेम[८७]-लव-लीन[2] मन ।
मुनिवर बुझि मन धीति[८८], करि प्रणाम गये हेमत[८९] पह ॥४६॥

दोहा

गये हेमाचल निकट मुनि, नृपति कीन्ह सनमान ।
अरघ[९०] पदारथ कइय कय, पुछिन्ह[3] कहो बयान[९१] ॥४७॥

(सप्तरिखि कथयति गीत गौड़ मालवरागे) - ५२

अयलहुँ हम तुअ पास नृपति सनु घटना एक विचारि ।
गौरि कुमारि नृपति घर सुन्दरि[4], सुन्दर वर त्रिपुरारि ॥
परम जोग[९२] सुन्दर वर सङ्कर, निन्दत नहि संसार ।
अनुमत करिय समाज सुजन लय, अओर[5] अपन परिवार ॥
प्रथम[९३] रानि सनमानि विचारिअ, तखन सङ्ग समाज ।
बरगुन एहन कतहु नहि भेटत, महादेव वर राज ॥
तीनू[6] लोकक सोक[९४] नेवारथि, सुर मुनिगन सब दास ।
घटक-बचन सुनि [९५]ऋषि उठि गेलाह जहाँ निज रनिवास ॥
कुल परिवार सुजन परिजन जत, सबहि हँकारि बोलाय ।
घटक-बचन पुनि सबहि सुनाओल, अनुमति कहिअ बिड़ाय ॥
रानि सहित अनुमत सम्मति भेल सबक मिलल एक भाव ।
हरखि जमाय करिअ सिवसङ्कर, करण कन्हाराम गाय ॥ ॥

८७ - पार्वती प्रेमक थोड़ो मात्रा मे एकाग्र । ८८ - धैर्य । ८९-हिमालयक लग ।
९० - अर्घ्यक हेतु जल । ९१ - आगमन । ९२ - योग्य । ९३ - पहिने रानीकें सम्मान कय विचार करू ।
९४ - शोकक निवारण करथि । ९५ - हिमालय ।

1 - देखो । 2 - लीलीन । 3 - पुछिन्ह । 4 - ० । 5 - अओ । 6 - तिनि ।

छन्द--५३

पुछल[7] मुनिवर पास[९६] गिरिवर, कहल विधिक सकार यो ।
उमा-वर हर करिअ समुचित, तकर करिअ विचार यो ॥
सुनि गिरिवर कीन्ह अनुमत सुदिन लगन लिखाय यो ।
देल मुनिकर लगनपाती, चलल हरखित धाय यो ॥

दोहा

लय पाती तब सप्तरिखि, मुदित चले हरखाय ।
पाती दीन्ह बिरञ्चि[९७] कर, आनन्द मन अधिकाय ॥४८॥

लगनपत्रिका-गीतं गायति – ५४

लगनपाती रिखि आनल, सब जन[8] जानल हे ।
ब्रह्मा बाँचि सुनाब, हरख सब मानल हे[9] ॥
देल घुमाय लगन विधि[10], सब भेल सिद्धी[11] हे ।
सुर मुनि परम अनन्द, पाओल [12]नव नीधी हे ॥
गगन दुन्दुभी बाजए, सब जन[13] गाजए हे ।
हरक विवाह उछाह, साज सब साजए हे ॥
सुर [९८]सुमन बरसाओल, सिवहि चढ़ाओल हे ।
घर घर उधब बधाब, कन्हाराम गाओल हे ॥

दोहा

लगन विहाए[९९] लाए मुनि, सुनि सुर मुनि गन्धर्व ।
करत साज बरियात के, सुरगण हरगण[१००] सर्व ॥४९॥

९६ - लगक पर्वत कें । ९७ — ब्रह्माक हाथ मे । ९८ — देवता फूल बरसओलनि ।
९९ — स्थिर कय । १०० - महादेवक गण ।

7 - पुनि पुछल । 8 - ० । 9 - ० । 10 - विधी ।
11 - सीद्धी । 12 - जनि नब । 13 - ० ।

(गिरिराज स्वयंम्वर आरम्भ करथि । तस्य गीतं गायति)--५५

कथा भेल मनमोल, दुहु दिस मानल हे ।
सुदिन सुघड़ी तकाय, स्वयम्वर ठानल हे ॥
हेमत भवन भरि नगर मोद मुदित मन हे ।
गौरी विवाह उछाह देखब दृग कखन हे ॥
मेना नगर हकारि नारि सब आवए हे ॥
कोकिल[१] बैन उचारि मङ्गल गीत गाबए हे ॥
कौतुक देखि मनाइनि अवसर पाओल हे ।
दिव्य - भूषण पट[२] चीर सबहि पहिराओल हे ॥
सबहक चित उदवेग लागि रहल अति हे ।
कखन उमा सिर सिन्दूर मनाइनि देखति हे ॥
धरु धैरज मन लाए कन्हाराम कवि भन हे ।
परसन्न होएत महेस पुरत अभिमत मन हे ॥

पुनः गीतं गायति - ५६

हाट बाट जत पुर महँ रे सब गली बजारे ।
[३]कनकहि सबहि बन्धाओल रे, जगमग भल कारे ॥
कनक भवन भरि[४] पुर भेल रे, नृप देल बनवाए ।
पैघ छोट लखि पड़ नहि रे, धनपति समुदाए ॥
नृप मन्दिर मणिमय रचि रे, सोभा अधिकाए ॥
अमर[५] नगर देखि झखि[६] रह रे, सुरपति ललचाए ॥
जनवासा नृप प्रथमहि रे रचि ललित बिताने[७] ।
चित्र विचित्र उरेहल[८] रे, कए तरह मकाने ॥
ब्याह वस्तु जगमह जत रे, तत भरल भड़ारे ।
कत सरञ्जाम कयल नृप रे, नहि रहल सुमारे ।

१ - कोइलीक समान वाणी । २ - रेशमी वस्त्र । ३ - सोनाक । ४—नगर भरि । ५ - देवता लोकनि नगर कें देखि । ६ - पछताइत छथि । ७ - चनवा । ८ - परिष्कृत कयल ।

कान्हाराम भन भगवति रे, जेहि गृह अवतारे ।
तहाँ कमी कोन बातक रे नृप सबय समारे[९] ॥

(अथ श्री महादेवक सिंगार, बरिआतक तैआरि । तस्य गीतं गायति । गीतिका छन्द) -- ५७

सबहि कर सिंगार गन[१०] सब, जटा मौरि[११] बनाय हे ।
मौरि बेड़ल विविध विषधर, फना देल लटकाय हे ॥
साल[१२] अओ रुण्डमाल[1] परिहरि[१३], बाघ छाल ओढ़ाय हे ।
कान कुण्डल रुण्डमाला[१४], कर कपाल गथाय हे ॥
पुनि रुण्डमाल गथाय पहिरल, माल कण्ठ लखाय हे ।
भङ्ग भोजन भङ्ग सिर[2] बह, अङ्ग खाक[१५] लगाए हे ॥
गरा सोभ[१६] उपवीत सुन्दर, बासुकी लपटाए हे ।
चन्द्र भाल बिसाल लोचन, एक अनल[१७] धहाए हे ॥
भूत प्रेत पिसाच परिजन, नाच जोगिनि धाए हे ।
करत गन गन मनहि मन गन विकट भेष बनाए हे ॥
चलल हर वर बरद पर चढ़ि डमरु लेल बजाए हे ।
जुत्थ[3] जुत्थ बरात भूत गन, चलल अति हरखाए हे ॥
असुभ भेख देखि सिव केर, सुर[१८] निया मुसुकाए हे ।
दुल्लहु लाएक[१९] दुल्लहि जग नहि, कौन करब जमाए हे ॥
उमत वर बरिआत उमत, समत केओ नहि आए हे ।
कौन विधि ससुरारि निबहब, संग बाग न भाए हे ॥

९ - सजाओल । १० —महादेवक गण सब । ११—मुकुट । १२—चादरि । १३—छोड़ि । १४—रुद्राक्षक माला । १५ —छाउर । १६ —जनेउ । १७ —आगि धधकैत अछि । १८—देवस्त्री । १९—योग्य ।

1 - रुमाल । 2 - सिलह । 3 जुत्थ ।

करथ कवि कान्हाराम कहु पुनि, सुनिअ सब मन लाए हे ।
[२०]जगतपति [२१]यतिनाथ शङ्कर, करब अपन उराए हे ॥

(देवतागन बरात गच्छति, तस्य गीतम)--५८

विष्णु बिरञ्चि[२२] सुरपति, सुर मुनि किन्नर[२३] हे ।
साजि समाज बनाय, चलल बरात[२४] हर हे ॥
विष्णु[२५]-सयन जगमगित, देखि भेटल सोक हे ।
हर दुलहु अनुरूप, हसत पथ लोक हे ॥
विष्णु कहल बिधि, सुनिअ सहित सुरराज हे ।
फरक फरक भए चलहु सैन[२६] समाज हे ॥
हरिक बचन सुनि शङ्कर, मन मुसकाय हे ।
फेरल हरगन[२७] सकल, शृङ्गी बजाय हे ॥
हरआज्ञा मन आनि, फिरल गन धाए हे ।
प्रभुपद कएल प्रणाम, बिकट रूप आए हे ॥
कन्हाराम भन हरगन, देखि सक्रा हे ।
हसल सकल ठहाए, देव[२८] सुरभूप हे ॥

गीतिका छन्द--५९

भेख अमित अनेक बाहन करत नाना रंग हे ।
देखि सयन२९ समाज शङ्कर, बिहुसि कए लेल रांग हे ॥
काहु नयन[३०] न श्रवन नासा, कर तमासा धाए हे ।
काहु बाहु बिहून देखिअ, काहु बाहु घनेर[३२] हे ॥

२०—संसारक ईश । २१—संन्यासीक नाथ । २२—ब्रह्मा । २३—किन्नर (देवगण विशेष) । २४—महादेवक बरियाती । २५—सेवनाग के । २६—सेना । २७—महादेवक गण । २८—देवता ओ देवराज । २९—सैन्य (अजन दल) । ३०—ककरो आँखियें नहि त ककरहु कान नाक नहि । ३१—विहीन । ३२—बहुतो ।

4—पतिनाथ ।

३३रिष्ट पुष्ट अनिष्ट धूसर, रक्त रूप कराल हे ।
३४छीन तन कोपीन काहु न, भूषन कर कपाल हे ॥
असुर३५ श्वान [1]शृगाल खर मुख, भरे सोनित गात हे ।
आसमद जे गर्द करते चले सम्भु बरात हे ॥
कन्हाराम भन गन-भेख अगनित, कौन बरन ३६अमाति हे ।
चले जात बरात भूतगन, करत अद्भुत भाँति ॥

(मगुपुर[३७] लोक वर बरिआत देखि गीतं गायति) : – ६०

बरद चढ़ल हर चलल बिआहय, भूत प्रेत बरात गे माई ।
डिमि डिमि डमरु बजाब बृषभ३८ पर, आक धुथुर खात गे माई ॥
गरा३९ गरल, उर४० फनिपति लह-लह, बिभूति भरल भरि गात४१ गे माई ।
पाट [४२]पटम्बर अम्बर तन नहि बाघछाल फहरात गे माई ॥
दिग[४३] परिधान लाज2 नहि तन[४४] मह छन छन धरए धेआन गे माई ।
मगुपुर[४५] लोक देखि वर बाउर[४६], काहु न रहल गेआन गे माई ॥
वर बउराहु[४७] भेख बिकट अति, देखो लोगो धाय गे माई ।
एहन उमत वर कौन बिआहय, देखितहि लोक डेराय गे माई ॥
धन्य हिवा४८ तेहि माय बाप के, जे करए एहन जमाय गे माई ।
एहन उमत दुल्लह संग दुलहिन, निबहब कौन उपाए गे माई ॥
कान्हाराम भन सुमरि सिव मन, सुनहु सकल नर नारि गे माई ।
धन्य भाग अहिवात४९ अचल तेहि, जेहि वर मिलु त्रिपुरारि गे माई ॥

३३—हृष्ट (मोटायल) । ३४—क्षीण शरीर ।
३५—दैत्य कुकुर गिदड़ गदहा सनक मुँहबला । ३६—संग
३७—मार्ग मे नगरक लोग । ३८—वृषभ (बसहा) । ३९—कण्ठ मे विष । ४०—छाती पर साँप । ४१—देह । ४२—रेशमी वस्त्रक पहिरन । ४३—दिशा रूपी पहिरन (नाङट) । ४४—देह मे । ४५—मार्ग मे नगरक लोक । ४६—बताह । ४७—बताह । ४८—साहस । ४९—सौभाग्य ।

1—श्रीगाल । 2—लाज ।

पुन: दोसर ग्रामलोक उक्ति, गीतं गायति--६१

उमत उगन[५०] बर, चलल बिधाह कर हे ।
आगे माइ उमत[५१] सङ्ग बरिआत, एहन बर के कर हे ॥
नगन[५२] सतत रह, लाज न तन मह हे ।
आगे माइ, भसम भ ल भरि गातु[५३], एहन बर के कर हे ॥
बुड़ सथुर बर, खाय धुथुर फर हे ।
आगे माइ, थर थर कपइत देह, एहन बर के कर हे ॥
डगमगात चल, नयन अनल[५४] बर हे ।
आगे माइ, भूत प्रेत सिनेह, एहन बर के कर हे ॥
त्रिशूल खटङ्ग[५५] धर, असुभ भेष बर हे ।
आगे माइ, देखइत परम भयान, एहन बर के कर हे ॥
धिकाह सुन्दर बर, कयल[५६] कुरूप हर हे ॥
आगे माइ, कन्हाराम कवि भान, एहन बर के कर हे ॥

(राजा गिरिराजका[1] बरिआती नेओता आब । तस्य गीतं
गायति मालव रागे) --६२

गिरि[५७] लघु पैघ सकल नृप[५८] नेओतल, नदी नाला तालावे[2] ।
बन सागर सभ नेओत पठाओल, मुदित[५९] मनोहर भावे ॥
कामरूपी सुन्दर तनु[६०] धरि धरि, चलल नेओत सब भारी ।
सङ्ग समाज सहित बर नागरि, आगरि पिआहि पिआरी ॥

५०—उग्रनाथ (महादेव) । ५१—उन्मत्त बरियाती संग मे । ५२—नाङट । ५३—देह मे । ५४—आगि । ५५—त्रिशूल रूप मे सोंटा । ५६—महादेव कुरूप बनल छथि । ५७—पैघ ओ छोट सभ पर्वत कें । ५८—राजा हिमालय । ५९ - आनन्दित । ६० - देह ।

1 - गिरिराज । 2 - तलावे ।

परम सिनेह मंगल पुनि करइत, पहुँचल नृपति अवासे ।
आदर भाव सकल [3]सनमानल[६१] देल सुखद सुखवासे ॥
नगर सगर[६२] छवि देखि मोहित छवि[६३], विधिकृत अति लघु लागे ।
बाग तड़ाग कूप सरिता बन, सुभग समारल[६४] आगे ॥
कञ्चन[६५] कलस विलस बर घर-घर, सोभा बरनि न जाए ।
[4]नारी पुरुष चतुर छवि सुललित, सुर मुनि मन ललचाए ॥
जगदम्बा जेहि नगर जनम लेल, से पुर अति अभिरामे ।
सुख सम्पति संप्रदा मङ्गल नित, भनत करण कन्हारामे ॥

गीत कुमरमक --६३

सरोवर[६६] तट सब, ओ रे चलि भेली । कुमरमक उपाय करय गेली ॥
गीति नृत्य[5] कत, ओ रे करइत । विविध बाजन सब बजइत ॥
कौतुक कर सब, ओ रे कत रङ्ग । नारि वृन्द आनन्द सङ्ग ॥
कुमरम गौरी केर[6], ओ रे जखन भेल । चिडड़ा[7] बिलहि खुइछा देल ॥
गौरी सहित चलु, ओ रे मनाइनि । भवन गमनसङ्ग गाइनि ॥
कन्हाराम भन ओ रे सुमरि हर । परिछि उमा लय गेलि घर ॥

गीत लावा भुजाउनि--६४

लावा भुजय बैसलि बहिनिञा, वीधि[६७] निपुनिञा हे ।
आहे, बहिनोय[६८] मौरि[8] चढ़ाय बैसलाह, चुल्हा दहिनिञा हे ॥
लावा भुजय बहिनिञा, थोरे धनिञा हे ।
आहे, लावा भुजि कएल तैयार, की अचरे झपनिञा हे ॥

६१ - सम्मानित कयल । ६२ - सुन्दरता । ६३ - बधाताक रचल सौन्दर्य अत्यन्त तुच्छ लगैछ । ६४ - सजाओल । ६५—सोनाक घट । ६६—पोखरिक कछेर । ६७—विधि करबा मे निपुण । ६८ - मुकुट ।

3 - सन 4 - नारि । 5 - नित्त । 6 - कर । 7 - चिड़डा बिलहि खुइछा बेल । 8 - मौरि ।

सुनह भैया कहनिआँ[६९], मानु बहिनिआँ हे ।
आहे, की देब मोहि इनाम, कि लबा-[७०]भुजउनिआँ हे ॥
कन्हाराम एह भनिआँ, सुनू बहिनिआँ हे ।
आहे, सबय थोक सोहार, कि जे मन मानिआँ हे[१] ॥

गीत बिलौकीक--६५

शुभ शुभ कें बहराएलिह, आगे माइ, गबइत मङ्गल चार ।
कुल परिवार अपन जत, आगे माइ, गौरि लागलि तेहि द्वार ॥
बिलौकी मांगु हे ॥
दूबि धान दए चुमावि हे, आगे माइ, युग युग रमा अहिवात ।
हिरमनि रतन जतन कए, आगे माइ, देल मनाइनि हाथ ॥बिलौकी०॥
केओ देल औंठी मुनरिआ हे, आगे माइ, केओ देल मोतिक हार ।
केओ देल टकआ मोहर हे, आगे माइ, जकरा जे परकार ॥बिलौकी०॥
सगर नगर घर फिरि फिरि हे, आगे माइ, हरषित भेल अवास ।
परिछि सबहु घर गेलिहि आगे माइ, कन्हाराम कवि गाब ॥बिलौकी०॥

दोहा--५०

नगरसमीप बरात जब आए, गौरि कहल ई बात ।
विप्र हजाम पठाविअ खबरि देब बरिआत ॥

ब्राह्मण हजाम आगमन गीत--६६

आएल ब्राह्मण सहित हजाम । कहए समाद बैसल नृपधाम ॥
नगर निकट आएल बरिआत । आबिअ परिछि जात बरिआत ॥
ब्राह्मण नापित पएर धोआए । विविध प्रकारक भोजन कराए ॥
परिछए चलल बाजन सभ बाज । बरिआतिक सभ साज समाज ॥

६९ - निवेदन । ७० - लावाभुजाओन (लावा भूजक इनाम) ।

१ - प्रकाशित पोथी एतहि समाप्त अछि ।

नगर लोक सभ अति हरषाए । मातृका पूजा करए नृप जाए ॥
करण कन्हाराम एह पद भान । ब्राह्मण नापित गेल लए पान ॥

गीत मातृकापूजा--६७

तिल कुश लेल हेमकर, मातृका पूजा विधि कर हे ।
अँकुरी अच्छत नैवेद, सोडह ठाम धर ॥
गोमय दूबि अनाओल, रछिका बनाओल ॥
सोडह रछिका के बरन, दए पतिआनी सोभन ॥
द्विजा[१] पढ़ाबहु जाए, वसुधारा घृत ढारि भेल मातृपूजा ॥
कन्हाराम भन हेमकर विधिकर ।
शुभ शुभ कए उठि गेला, नृपति मण्डप पर ॥

गीत सोहाग--६८

आइलि धोबिनि दड़िआ हाथ कङ्कुरिआ हे ।
तोहरा के धएल गमार, कि कएल एत बेरिआ हे ॥
कएलें बेरि अबेरिआ धोबिनि छिनरिआ हे ।
गौरिहि देहले सोहाग, होइछ बड़ देरिआ हे ॥
धोबिनि पसारल औरिआ, दए निज डरिआ हे ।
सखन देब सोहाग, सुनल कत गरिआ हे ॥
कन्हाराम भन एहि बेरिआ, धोबिनिक औरिआ हे ।
गौरिहि देल सोहाग, पाओल लाल सड़िआ हे ॥

बरिआत परिछय गीतं गायति--६९

गज तुरङ्ग साजल तनकाल । बाजन बिविध बाजए अस्थकाल ॥
चढ़ि चढ़ि जने भेल तैआर । जमा ओड़ा लए कमर कटार ॥
शाल दोशाला अनेक पोशाक । पहिर लेल सभ एक सौं एक ॥
जगमग चीरा लेल पहीर । शुभ गजान चढ़ि लेल नृपबीर ॥

१ - एहि गीतक पाठ इतस्ततः भए गेल बुझाइछ ।

मणिमय भूषन लेल लगाय । मुदित चलल परिछए जमाय ॥
पढ़त कवित्त खड़ाखा भाट । नर्त्तक नृत्त करैत चल बाट ॥
आसमर्द गर्द होअ घनघोल । ककरो केओ बूझ नहि बोल ॥
सुतर सवार घोर कुदाव । घोड़ा कुदाव अति परभाव ॥
[1]सोहरा सुनि कतेक लोक धाय । भेल घमसान वरनि न जाय ॥
तेहि विधि बरिछय कएल पयान । लोकक लेल नहि रहल ठकान ॥
कान्हाराम जत भेल समान । तखनुक सोभा के कर बखान ॥

छन्द—७०

सहस्र एक मशाल लेसल, सीढ़िक कओनि ठेकान यो ।
भेल तेहन इजोत पुरभरि, राति नहि पहिचान यो ॥
आतशबाजी कतेक तरहक, मुलुक मुलुकक आय यो ।
छुटैत होत अनोर चहु दिस, जएसे घन घहराय यो ॥
लालटेम अनेक भए गेल, रोसनी बहुभाति यो ।
देखि वर बरियात चकित, उगहि दिनकर राति यो ॥
एहन सगर नगर तमासा पहिने नृप कएल ब्योँत यो ।
नृप मन्दिर सहु भवन मएँ कत, करए मणिक इजोत यो ॥

(प्राचीन[2] पुस्तकक '१११' संख्यक गीत सँ आगाँ)

गीतिका छन्द

गौरि शंकर ब्याह, परम उछाह, मंगल बखान हे ।
जेहन मति गति, देल पशुपति, तेहन कएलहुँ गान हे ॥
कान्हाराम ई करत गोचर सुनिअ प्रभु त्रिपुरारि हे ।
टारि आरत करु कृतारथ, सुदृष्ट दृगहि निहारि हे ॥
जगतपति हर पुरिए अभिमत, सकल दोख निवारि हे ।
नाम अहरण हरण शङ्कर, दिअ पदारथ चारि हे ॥

1—विशेष चर्चा । 2—मूल पोथीक एहि पाँती सँ स्पष्ट अछि जे गीत सं० ७० सँ आगू ४१ गोट गीत अप्राप्त अछि ।

हरगौरि ब्याह उछाह मङ्गल, गाव जे सुन कान हे ।
ताहि सुखसम्पत्ति सभ विधि, पुत्र पौत्रहि मान हे ॥
सुचित चित्त दए, पढ़हि गावहि, धरहि शिवपद ध्यान हे
सकल दोष निवारि शङ्कर, अभय देहि वरदान हे ॥

दोहा

राग अनेकक गीत सभ, कीन्ह प्रमाण बखान ।
गीत गीत के भास सौँ, गान करअ मतिमान ॥
तखन सुनत सललित परम, लागत अति अभिराम ।
छन्द भङ्ग पद करिअ जनु, सबकेँ कह कन्हाराम ॥

छन्द

हरजीवदासक तनय हलधर, तासु सुत कान्हाराम यो ।
'कर्ण' मैथिल वंश 'गड़कब', विदित जग सवठाम यो ॥
देश तिरहुत मध्य 'केउटि', ग्राम अतिहि प्रशंस यो ।
तहाँ बसत कवि कन्हाराम, कत बसत थिर सुवंश यो ॥

इति श्री गौरीशङ्कर ब्याह उत्सव चरित्र नाम नाटकं
करण कान्हारामदास विरचितं सम्पूर्णम् ॥

